



विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 35 : नई दिल्ली : 23-29 नवम्बर 2018

परम श्रद्धास्पद आचार्यश्री महाश्रमण ने चेन्नई चतुर्मास अत्यंत प्रभावक रूप में परिसम्पन्न कर चतुर्मास स्थल परिसर से ससंध मंगल प्रस्थान कर दिया है। पूज्यप्रवर के प्रस्थान से भावविभोर चेन्नईवासियों की अश्रुधारा मानों मानसूनी वर्षा के रूप में बरस रही है। आचार्यप्रवर का यह पावस-प्रवास अनेक दृष्टियों से ऐतिहासिक और विशिष्ट रहा। निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर कोयम्बतूर मर्यादा महोत्सव से पूर्व तमिलनाडु के कई क्षेत्रों और पाण्डिचेरी का स्पर्श करेंगे, किन्तु मर्यादा महोत्सव से पूर्व एकाधिक दिनों का प्रवास मात्र पाण्डिचेरी, कडलूर और तिरुपुर में ही है। कडलूर में नववर्ष के मंगलपाठ और तिरुपुर में वर्धमान महोत्सव का समायोजन होगा। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ६ फरवरी को कोयम्बतूर में मर्यादा महोत्सव आयोजन स्थल के परिपार्श्व में पधारेंगे। १०, ११, १२ फरवरी २०१६ को १५५वें मर्यादा महोत्सव का समायोजन होगा।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण चेन्नई में

छह कारणों से होता है साधु का भोजन

१२ नवम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाण' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने साधु और भोजन के संदर्भ में कहा है कि साधु के भोजन करने के छह कारण हैं--

१. वेदना--भूख अपने आप में वेदना होती है। भूख लगे और भोजन न मिले तो कष्ट हो सकता है। किसी अपेक्षा से कहा गया है कि भूख के समान कोई वेदना नहीं होती। भूखा आदमी अपराध में भी जा सकता है। भूख मिटाने के लिए साधु भोजन करता है।
२. वैयावृत्य--दूसरों की सेवा करने के लिए साधु आहार करता है। भोजन के बिना सेवा कार्य कितना क्या हो सकता है? सेवा के लिए शक्ति अपेक्षित होती है और शक्ति के लिए आहार अपेक्षित होता है।
३. ईर्यासमिति की साधना--भूख की स्थिति में चक्कर आ सकते हैं और उस कारण ईर्या समिति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। ईर्या समिति की सम्यक् आराधना के लिए साधु भोजन करता है।
४. संयम की सुरक्षा--संयम जीवन की सुरक्षा के लिए साधु भोजन कर सकता है। साधु को जब तक यह लगे कि इस शरीर से नए-नए आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हो रहे हैं, तब तक उसे भोजन करना चाहिए, किन्तु नए लाभों की प्राप्ति होना बंद हो जाए तो साधु को संलेखना-संधारा की ओर आगे बढ़ जाना चाहिए।
५. प्राण धारण--प्राण बलवान रह सके, इस कारण साधु भोजन कर सकता है।
६. धर्म चिंतन--शरीर की सक्षमता की स्थिति में धर्म चिन्तन अच्छे रूप में हो सकता है। आहार से शरीर सक्षम रह सकता है। इस कारण साधु आहार कर सकता है।

भोजन शरीर के लिए अपेक्षित है, किन्तु उसके साथ संयम और विवेक रहना चाहिए। भोजन मानसिक विकृति का निमित्त भी बन सकता है। भोजन के लिए दो दृष्टिकोण रहने चाहिए--कौन-सा भोजन शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल रहेगा और कौन-सा भोजन साधना की दृष्टि से अनुकूल रहेगा? साधु को ऐसा और इतना भोजन नहीं करना चाहिए कि उसके स्वास्थ्य और साधना में बाधा उत्पन्न हो। उसे अति भोजन नहीं करना चाहिए। साधु को यह ध्यान देना चाहिए कि उसका भोजन स्वास्थ्य और साधना के लिए हितकर हो, परिमित हो और

सम्यक् विधि से प्राप्त हो। इस प्रकार साधु को हित, मित और ऋत भोजन करना चाहिए।’

प्रवास व्यवस्था समिति के अंतर्गत परिसर व्यवस्था के संयोजक श्री सुरेशचंद्र मूथा तथा उपाध्यक्ष श्री जे. गौतमचंद्र सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

संघ सेवा पुरस्कार अर्पण समारोह

कार्यक्रम के उपरान्त परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती द्वारा श्री चंपकभाई मेहता (वाव-सूरत) को संघ सेवा पुरस्कार प्रदान करने का उपक्रम भी रहा। इस संदर्भ में श्री विमल चिप्पड़ ने पुरस्कार प्रदाता एवं पुरस्कार प्राप्तकर्ता का परिचय प्रस्तुत किया। जैन विश्व भारती के मुख्य न्यासी श्री मनोज लूणिया, मंत्री श्री गौरव माण्डोत आदि तथा नेमचंद्र जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री जेसराज सेखाणी ने स्मृति चिन्ह और पुरस्कार राशि एक लाख पच्चीस हजार रुपए का चैक श्री चंपकभाई मेहता को पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया। श्री चंपकभाई मेहता ने अपने आस्थासिक्त हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए पुरस्कार में प्राप्त राशि सहित पांच लाख रुपए जैन विश्व भारती में अनुदान करने की घोषणा की।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने पुरस्कार के संदर्भ में कहा--‘श्रावक समाज में श्रद्धा और सेवा भावना देखने को मिलती है। धर्मसंघ से जुड़ी हुई संस्थाओं में भी कितने-कितने कार्यकर्ता अपनी सेवाएं देते हैं। कई संघीय संस्थाओं के साथ आध्यात्मिकता, धार्मिकता जुड़ी हुई प्रतीत हो रही है। दूसरों की सेवा करना जीवन की एक उपलब्धि होती है। पुरस्कार मानों सेवा का मूल्यांकन होता है। पुरस्कार देने वाले किसी व्यक्ति का मूल्यांकन कर उसे आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। पुरस्कार ग्रहण करने वाले अपने आपको और अधिक निरवद्य पवित्र सेवा के साथ जोड़ने का प्रयास करें, यह अभिलषणीय है।’

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बैताला ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए सन् २०१८ का मनोहरीदेवी डागा समाज सेवा पुरस्कार रतनलालजी दफ्तरी (सरदारशहर-पटियाला) को देने की घोषणा की। यह पुरस्कार कोयम्बतूर में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में प्रदान किया जाएगा।

प्रमाद से बचें

१३ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान ‘ठाणं’ आगमाधारित मंगल प्रवचन में कहा--‘अपनी आत्मा के प्रति अजागरूकता की स्थिति प्रमाद कहलाती है। वह छह रूपों में हो सकता है--

१. मद्य--आदमी मदिरापान कर सुध-बुध खो देता है, वह मद्य प्रमाद होता है।
२. निद्रा--नींद में भी आदमी अजागरूक बन सकता है। इसलिए निद्रा भी एक प्रमाद है।
३. विषय--शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श--इन विषयों में आसक्त होना भी प्रमाद है।
४. कषाय--गुस्सा, अहंकार, लोभ, राग-द्वेष कषाय भी प्रमाद हैं, क्योंकि कषाय निमग्न व्यक्ति अपने प्रति अजागरूक हो जाता है।
५. द्यूत--जुआ व्यक्ति को आत्मा से दूर ले जाने वाली स्थिति को उत्पन्न करने वाला होता है। जुए से आदमी पतन के गर्त में भी जा सकता है। एक व्यक्ति का जुआ खेलना पूरे परिवार को कष्टप्रद स्थिति में डालने वाला हो सकता है।
६. प्रतिलेखन--साधु कपड़ों का प्रतिलेखन करता है। ज्यादा वस्त्र आदि उपकरण हों तो प्रतिलेखन स्वाध्याय में बाधक बन सकती है अथवा प्रतिलेखन में अजागरूक रहना प्रमाद है।

साधु हो या गृहस्थ सबको प्रमाद से बचने तथा साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने का यथासंभव यथोचित प्रयास करना चाहिए।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के मुख्य न्यासी श्री कन्हैयालाल जैन (पटावरी) ने अपने विचार व्यक्त

किए। प्रवास व्यवस्था समिति के अंतर्गत संस्कृति विभाग के संयोजक श्री एम.जी. बोहरा, आवास व्यवस्था के संयोजक श्री अशोक खतंग और श्री अशोक दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यचरण जैन विद्याश्रम में

१४ नवम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः प्रवास स्थल से प्रस्थान कर 'पुळ्ळ' में स्थित तेरापंथ युवक परिषद-चेन्नई के स्थान में पधारे। यहां पूज्यप्रवर का स्वल्पकालिक प्रवास और प्रातराश हुआ। तेयुप के कार्यकर्ता अपने आराध्य को अपने बीच पाकर अतिशय आह्लादित थे। तेयुप द्वारा यहां अपने कार्यालय, आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर तथा आचार्य महाश्रमण क्लिनिक का संचालन किया जाता है। यहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में तेयुप-चेन्नई के अध्यक्ष श्री भरत मरलेचा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में युवकों को पावन प्रेरणा प्रदान की।

तदुपरान्त आचार्यप्रवर निकटस्थ जैन विद्याश्रम में पधारे। विद्यालय से जुड़े कार्यकर्ताओं, शिक्षकों आदि ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर जैन विद्याश्रम परिसर में सूरजबाई नथमल डागा और मैनाबाई जुगराज डागा परिवार की ओर से एक खण्ड का नाम 'महाश्रमण विंग' के रूप में लोकार्पित किया गया। यह 'विंग' दुमंजिला है।

विद्यालय परिसर में आयोजित आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में डागा परिवार की सदस्याओं ने 'भिक्षु अष्टकम्' के कुछ पद्यों को प्रस्तुति देते हुए अपनी भावाभिव्यक्ति दी। डॉ. सुष्मिता डागा ने बालक लक्ष्य डागा ने पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनिज्म के महामंत्री डॉ. कृष्णचंद चोरड़िया, कोषाध्यक्ष श्री अमृतलाल डागा, तेरापंथी महासभा के न्यासी श्री ज्ञानचंद आंचलिया ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने बताया कि पांच कारणों से आदमी शिक्षा को प्राप्त नहीं कर सकता। ज्ञान प्राप्ति के पांच बाधक तत्त्व होते हैं--

१. अहंकार--विद्यार्थी के लिए अपेक्षित होता है कि वह अहंकार न करे। विद्या का आभूषण है विनय। यथार्थ के प्रति हमेशा विग्रमता का भाव होना चाहिए। सच्ची-अच्छी बात कहीं भी मिले, वह ग्रहण करने योग्य होती है। पूज्यों के प्रति भी विनय का भाव होना चाहिए। विद्यार्थी में विनय होता है तो वह विद्या को अच्छे रूप में ग्रहण कर सकता है।
२. गुस्सा--विद्यार्थी को ज्यादा गुस्सा नहीं करना चाहिए, शांति रखनी चाहिए।
३. प्रमाद--विद्यार्थी को प्रमाद से बचना चाहिए। शराब, गुटखा, बीड़ी, सिगरेट आदि-आदि नशीले पदार्थों के सेवन के प्रमाद से बचना चाहिए।
४. रोग--विद्यार्थी का शरीर स्वस्थ होता है तो विद्याध्ययन अच्छा हो सकता है।
५. आलस्य--विद्यार्थी को आलस्य से बचना चाहिए। आलस्य के समान शत्रु और परिश्रम के समान कोई बंधु नहीं होता।

जो विद्यार्थी इन पांचों बाधाओं से मुक्त रहता है, वह ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। आज १४ नवम्बर है। पंडित नेहरू से जुड़ा हुआ यह दिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। बच्चे अच्छे रहें, सच्चे रहें। बच्चे अच्छे रहेंगे तो देश का भविष्य भी अच्छा बन सकेगा। देश के विकास के लिए भौतिक, आर्थिक और शैक्षिक विकास अपेक्षित है तो नैतिकता और आध्यात्मिकता का विकास भी अपेक्षित होता है। भारत के बच्चों में नैतिकता के प्रति रुझान रहे और आध्यात्मिकता का विकास हो तो आशा की जा सकती है कि भारत और अधिक अच्छा देश बन सकेगा।

आज हम जैन विद्याश्रम में आए हैं। विद्यालय के नाम के साथ जैन शब्द जुड़ा हुआ है। यहां पढ़ने वाले

विद्यार्थियों को जैन धर्म, भगवान महावीर, जैन धर्म के सिद्धांतों, संवत्सरी, पर्युषण आदि के बारे में जानकारीयां मिलती रहें, उनमें नशामुक्ति के संस्कार रहें। जैन विद्याश्रम से जुड़े हुए प्रबन्धक, शिक्षक आदि की ओर से विद्यार्थियों में अच्छे संस्कारों के निर्माण का प्रयास होता रहे तो यहां पढ़ने वाले विद्यार्थी ज्यादा कल्याणकारी और उपयोगी हो सकेंगे। यह विद्यालय ज्ञान के साथ-साथ अच्छे संस्कारों के निर्माण में भी कामयाब बने, मंगलकामना।'

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए। कार्यक्रम का संचालन श्री पी.सी. चोपड़ा ने किया।

कार्यक्रम के उपरान्त जैन विद्याश्रम से प्रस्थान कर परम पावन आचार्यप्रवर पुनः चतुर्मास स्थल परिसर में पधारे। आज का कुल विहार लगभग दस कि.मी. का रहा।

जीवन का प्रतिलेखन करें

१५ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'छह प्रकार की प्रमाद प्रतिलेखना बताई गई है--आरभटा, सम्मर्दा, मोशली, प्रस्फोटा, विक्षिप्ता और वेदिका। जैन साधुचर्या में प्रतिलेखन भी एक करणीय कार्य है। प्रतिलेखन से तात्पर्य है--निरीक्षण करना। अपने कपड़ों, अन्य उपकरणों को देखना। उसका मुख्य प्रयोजन यह है कि वस्त्रों आदि में कोई जीव आदि हों तो उनकी हिंसा से बचाव हो सके। प्रतिलेखन के दो समय मुख्यतया निर्धारित हैं--सूर्योदय के कुछ समय पूर्व से एक मुहूर्त दिन चढ़े तक और शाम को दिन के चौथे प्रहर के प्रारम्भ से लेकर सूर्यास्त के कुछ समय बाद तक। जिन उपकरणों को एक ही बार प्रतिलेखित करने का विधान है, उन्हें दिन में किसी भी समय यथाविधि प्रतिलेखित किया जा सकता है।

आदमी को अपने जीवन का भी प्रतिलेखन करना चाहिए। उसे यह ध्यान देना चाहिए कि जीवन में क्या-क्या कमजोरिया हैं? कमजोरियों को जानने के बाद उन्हें निवारित करने का प्रयत्न करना चाहिए। जैसे चिकित्सक पहले रोग की जड़ को जानने का प्रयास करता है, उसके लिए विभिन्न जांचें भी की जाती हैं। रोग का मूल पकड़ में आ जाए और उसे उन्मूलित कर दिया जाए तो आदमी रोगमुक्त बन सकता है। शरीर के रोगों पर ध्यान दिया जाता है, उसी प्रकार आत्मा के रोगों पर ध्यान देकर उसके मूल को खोजना चाहिए। मूल को जानकर उसे उन्मूलित करने का प्रयास किया जाए तो आत्मा भी रोगमुक्त बन सकती है।

छठे गुणस्थान तक के व्यक्ति से गलती होना भी संभव है। गृहस्थ से क्या, साधु से भी गलती हो सकती है। गलती होने पर प्रायश्चित्त के द्वारा उसके शोधन का प्रयत्न करना चाहिए। एक बार बड़ी भूल हो जाए तो उसे कभी दोहराना नहीं चाहिए। गलतियों का परिष्कार होने से जीवन सुखमय बन सकता है। जीवन को आनंदमय बनाने के लिए जीवन का प्रतिलेखन करते रहना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'सामुदायिक जीवन में रहते हुए सेवा की भावना न रहे तो कठिनाई आ सकती है। एक समुदाय में रहने वाले व्यक्तियों का यह कर्तव्य है कि अपने समुदाय का कोई व्यक्ति कष्ट में है तो उसकी सेवा करना। जहां जैसी अपेक्षा हो, इंगित-निर्देश हो, सेवा के लिए तैयार रहना चाहिए। जो व्यक्ति स्वयं की सक्षमता की स्थिति में अपेक्षा होने पर भी दूसरों की सेवा नहीं करता, दुर्भाग्य से कभी उसे सेवा की अपेक्षा पड़ जाए तो उसकी सेवा कौन करेगा? सेवा देने की भावना हो तो अपेक्षा पड़ने पर सेवा ली भी जा सकती है। सेवा ऐसा तत्त्व है, जो सामुदायिक जीवन में बहुत आवश्यक होता है। सेवा करने वाला व्यक्ति सेवा प्राप्त कर सकता है।

सेवा के संदर्भ में सेव्य की प्रकृति की विकृति और उसके साथ अतीत में रहे कटु संबंधों को बीच में नहीं लाना चाहिए। जहां सेवा की अपेक्षा हो, पिछली कटु बातों को गौण कर सेवा करनी चाहिए। सेवा की भावना निःशर्त रहनी चाहिए। अहोभाव से सेव्य की सेवा कर उसे चित्तसमाधि पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए। हम

सभी में यथौचित्य पवित्र सेवा की भावना रहनी चाहिए। सेव्य को यह न लगे कि सेवा करने वाले अलग हैं और वह अलग है। सेवा के संदर्भ में तो हम सब एक हैं।

सेवा के संदर्भ में एक प्रसंग मुझे याद आ गया। उसका सार मेरी स्मृति में इस प्रकार है--बीकानेर की ओर संतों के दो सिंघाड़े थे। एक सिंघाड़े में दो साधु थे और दूसरे सिंघाड़े में दो से अधिक साधु थे। दो संतों वाले सिंघाड़े में से किसी साधु को चिकित्सा की अपेक्षा थी। एक दिन दो संतों वाले सिंघाड़े के साधु अन्य सिंघाड़े के साधुओं से मिले। उस समय वार्तालाप के दौरान दो संतों वाले सिंघाड़े ने दूसरे सिंघाड़े के अग्रणी से कहा--'चिकित्सा की अपेक्षा थी, किन्तु मुनिश्री! अभी हम दो ही संत हैं। इसलिए फिर कभी चिकित्सा करवाएंगे।' दूसरे सिंघाड़े के अग्रणी बोले--'तुमने यह कैसे कह दिया कि हम दो ही हैं। तुम चिकित्सा करवाओ, हम सेवा के लिए तैयार हैं।'

वे संत थे मुनिश्री डूंगरमलजी स्वामी। जिसे सेवा की अपेक्षा थी, वह सिंघाड़ा मुनिश्री संगीतकुमारजी स्वामी का था। मैंने बाद में किसी संतों से यह प्रसंग सुना तो मुझे बहुत अच्छा लगा। इस प्रकार संघ के सदस्यों में सेवा का उत्साह रहना चाहिए।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित केरल उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री वी.जे. मेथ्यू ने अपने अभिभाषण में कहा--'अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी अहिंसा यात्रा के साथ हमारी केरल की धरती पर पधार रहे हैं, यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इसलिए आज मैं यहां आचार्यश्री के दर्शन करने आया हूं। केरलवासी आपका अपनी धरती पर स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं। हमारी राज्य सरकार 'राजकीय अतिथि' के रूप में आपका स्वागत करने के लिए आतुर है। केरल अभी बाढ़ की भीषण आपदा के दौर से गुजरा है। इस कठिन परिस्थिति में तेरापंथ धर्मसंघ की संस्था 'जय तुलसी फाउण्डेशन' के द्वारा 'केरल मुख्यमंत्री राहत कोष' में ५१ लाख का चेक प्रदान किया गया। इसके लिए मैं केरल सरकार और केरलवासियों की ओर से तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति आभार व्यक्त करता हूं।'

चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय सेठिया, उपाध्यक्ष श्री अमरचंद लूंकड़ तथा श्री रणजीत छल्लाणी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

गड्डे पर चद्दर मत डालो

१६ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने छह प्रकार की अप्रमाद प्रतिलेखना बताई हैं--अनर्तित, अवलित, अनानुबंधि, अमोशली, षट्पूर्व-नवखोटक तथा हाथ में प्राणियों का विशोधन करना।

प्रतिलेखन में अप्रमाद रहना चाहिए। अप्रमाद प्रतिलेखना मुख्यतया चारित्रात्माओं से संबंधित है। चारित्रात्माओं को प्रतिलेखना में जागरूकता रखनी चाहिए। एक दृष्टि से प्रतिलेखना स्वाध्याय का बाधक तत्त्व है, किन्तु प्रतिलेखन आवश्यक भी है, इसलिए साधु को उपकरणों का अल्पीकरण करना चाहिए, अल्पोपधि रहना चाहिए।

दो तरह के उपकरण होते हैं--अप्रातिहारिक और प्रातिहारिक। दोनों प्रकार के उपकरणों का अल्पीकरण करना चाहिए। आवश्यकतावश जितने उपकरण रखे जाएं, उनका प्रतिलेखन जागरूकतापूर्वक और विधियुक्त होना चाहिए। जितना संभव हो सके, प्रतिलेखन समय पर होना चाहिए। सूर्यास्त के बाद प्रतिलेखन करने से ज्यादा अच्छा है कि पहले ही उस कार्य से निवृत्ति हो जाए। प्रतिलेखन में अनावश्यक जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

विहारों में पुट्टों का भी संयम रहना चाहिए। अनावश्यक पुट्टों का संग्रह नहीं करना चाहिए। पुट्टों के संदर्भ में संघीय मर्यादा के प्रति उपयुक्त जागरूकता रहनी चाहिए। दवाइयों का भी अनावश्यक संग्रह नहीं करना चाहिए। उसमें भी विवेक बना रहना चाहिए।

प्रतिलेखन, प्रमार्जन साधुचर्या के मानों अभिन्न अंग हैं। चार अंगुल का 'खंडिया' भी प्रतिलेख्य होता है।

प्रमादवश उसकी प्रतिलेखना छोड़ दी जाए तो वह भी साधु के लिए दोष का कार्य होता है। जानबूझ कर तो प्रतिलेखन छोड़ना चाहिए ही नहीं, भूल से छूट जाए तो उसका प्रायश्चित्त ले लेना चाहिए। प्रतिलेखन की चर्चा निर्दोष रह सके, इसके प्रति जागरूकता रहनी चाहिए।

प्रतिलेखना को जीवन के साथ भी जोड़ा जा सकता है। चारित्रात्माओं और समणश्रेणी के सदस्यों को ध्यान देना चाहिए कि उनका जीवन क्रम कैसा है, उनकी साधना कैसे चल रही है? उनका प्रतिक्रमण कैसे होता है? प्रतिक्रमण बहुत अच्छा उपक्रम है। साधुओं का तो है ही, श्रावकों का भी प्रतिक्रमण बहुत अच्छा है। बारहव्रती श्रावक प्रतिदिन प्रतिक्रमण करें तो और भी अच्छी बात है। यदि वह न हो सके तो उन्हें पाक्षिक प्रतिक्रमण करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। प्रतिक्रमण में अच्छी लीनता आ जाए तो बहुत लाभ प्राप्त हो सकता है। चारित्रात्माओं को तो दिन-रात में दो बार प्रतिक्रमण करना होता है। उसमें जागरूकता, तल्लीनता रहनी चाहिए।

संयम की चद्दर जिसे प्राप्त होती है, उसका दायित्व होता है कि वह उस चद्दर को निर्मल बनाए रखे। कहीं कोई दाग लग जाए तो उसे प्रायश्चित्त रूपी जल-साबुन से साफ करने का प्रयत्न करना चाहिए। कोई दूसरों से अपने दोषों को भले छुपा ले, किन्तु स्वयं की आत्मा से उन्हें कैसे छुपाएगा। दोष का सेवन किया और उस पर छल-कपट की चद्दर डाल दी तो और ज्यादा नुकसान हो सकता है। किसी गड्ढे पर किसी ने चद्दर डाल दी और उस पर कोई व्यक्ति पांव रख दे तो वह कहां गिरेगा? यदि चद्दर नहीं बिछाई जाए तो वह व्यक्ति सावधानीपूर्वक एक तरफ से निकल भी सकता है। दोषों के गड्ढे पर छल-कपट की चद्दर डाल दी जाती है तो व्यक्ति उस गड्ढे में गिरकर ज्यादा चोटग्रस्त हो सकता है। दोषों के गड्ढों को प्रायश्चित्त के द्वारा भरने का प्रयास करना चाहिए।

देहावसान से पहले-पहले अपने दोषों की अच्छी तरह आलोचना कर विशोधि करने वाली चारित्रात्माएं आगे यथास्थिति अच्छे स्थान को प्राप्त हो सकती है। अन्यथा देवलोक में भी इतना गरिमापूर्ण स्थान नहीं मिलता। चारित्रात्माओं, समणश्रेणी और श्रावक-श्राविकाओं को अपने-अपने नियमों, व्यवस्थाओं के प्रति सम्यकृतया जागरूक रहते हुए उनका सम्यक् अनुपालन करने का प्रयत्न करना चाहिए।'

चतुर्मास व्यवस्था समिति के अंतर्गत आवास व्यवस्था के संयोजक श्री पुखराज बड़ोला, उपाध्यक्ष श्री भंवरलाल मरलेचा तथा श्री आनंद समदड़िया ने पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

साध्वी वसुधाश्रीजी कालधर्म को प्राप्त

गत १४ नवम्बर को साध्वी वसुधाश्रीजी (सूरत) का जयपुर में देहावसान हो गया। उनके संदर्भ में उद्गार व्यक्त करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'साध्वी वसुधाश्री का नाम पहले साध्वी वर्षाश्री था। बाद में उनका नाम बदलकर वसुधाश्री रखा गया। वह संसारपक्ष में भलावत परिवार से संबंधित थी। उन्होंने करीब २६ वर्ष की अवस्था में विक्रम संवत् २०५६ में परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। तप-जप में उनकी विशेष रुचि रहती थी। वर्तमान में वह साध्वी उर्मिलाकुमारीजी के सिंघाड़े में थी। उनका चतुर्मास पाली में हो रहा था। हमारे पास संवाद आया कि वसुधाश्री के स्वास्थ्य में कठिनाई है। मैंने अहमदाबाद में चिकित्सा की बात बताते हुए साध्वी ज्ञानयशा को उनकी सेवा में रहने का इंगित कर दिया। वे अहमदाबाद चली भी गईं। फिर जानकारी मिली कि बीमारी बड़ी है और काफी फैल भी गई है, इसलिए इसकी चिकित्सा जयपुर में उपयुक्त रहेगी। मैंने जयपुर में इलाज के लिए भी अनापत्ति दे दी। फिर मैंने साध्वी उर्मिलाकुमारीजी के पूरे सिंघाड़े को ही जयपुर में रहने का इंगित किया तो सिंघाड़े की शेष सभी साध्वियां भी जयपुर पहुंच गईं। प्रयत्न करने पर भी साध्वी वसुधाश्री को बचाया नहीं जा सका। वह छोटी उम्र में ही चली गईं। विक्रम संवत् २०७५ कार्तिक शुक्ला सप्तमी की रात्रि में लगभग ११.२५ बजे जयपुर में वह कालधर्म को प्राप्त हो गईं। हमारे धर्मसंघ की एक सदस्या विदा हो गईं। साध्वी उर्मिलाकुमारीजी के सिंघाड़े को सेवा का एक अवसर प्राप्त हुआ। साध्वी रायकुमारीजी (जयपुर)

को भी चिकित्सा के लिए बीदासर से जयपुर जाना पड़ा तो उनकी सेवा का जिम्मा भी साध्वी उर्मिलाकुमारीजी के सिंघाड़े को सौंपा गया।’

पूज्यप्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने साध्वी वसुधाश्रीजी की स्मृति में ‘चार लोगस्स’ का ध्यान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने साध्वी वसुधाश्रीजी के संदर्भ में कहा--‘साध्वी वसुधाश्रीजी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के युग में धर्मसंघ में दीक्षित हुईं। वे एक सेवाभावी साध्वी थीं। उन्होंने कम वर्षों में ही सेवाकेन्द्रों में संभवतः तीन अथवा चार चाकरी कर ली। वे गाती भी अच्छा थीं। वक्तव्य देने का भी उन्हें शौक था। केलवा चतुर्मास में आचार्यप्रवर ने कृपाकर उन्हें अपने साथ में रखवाया। उस दौरान जब कभी अवसर आता, वे गाने के लिए उद्यत रहतीं। कभी बहनों में बोलने का प्रसंग होता तो भी वे तत्पर रहतीं। उस चतुर्मास में साध्वी सुषमाकुमारीजी ने जैनेतर लोगों के बीच कार्य किया तो उनके साथ साध्वी वसुधाश्रीजी ने भी इस दृष्टि से पुरुषार्थ किया। वे अचानक अस्वस्थ हुईं। परम पूज्य गुरुदेव ने उनकी चिकित्सा की पूरी व्यवस्था करवाई, किन्तु आयुष्य के आगे किसी का बल नहीं चलता। साध्वी वसुधाश्रीजी ने अपना आयुष्य पूर्ण किया। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर वीतरागता की दिशा में विकास करती रहे।’

साध्वी वसुधाश्रीजी की संसारपक्षीया ज्ञाती साध्वी ज्योतियशाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

शुभ भावों में रहो

१७ नवम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान ‘ठाणं’ आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--‘जैन वाङ्मय में ‘लेश्या’ शब्द आता है। शास्त्रकार ने छह प्रकार की लेश्याएं बताई हैं--कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या। ये छह लेश्याएं प्राणी के भावात्मक तारतम्य को बताने वाली हैं। आदमी की भावधारा तरतमता वाली होती है। थोड़ी-सी देर में एक ही व्यक्ति की भावधारा में परिवर्तन आ सकता है। जैन वाङ्मय में एक और शब्द है--योग। लेश्या और योग में काफी साहचर्य है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। प्राणी जहां सयोगी होता है, वहां सलेश्यी भी होता है। जहां वह अयोगी होता है, वहां अलेश्यी भी हो जाता है। इस प्रकार लेश्या और योग (मनोयोग, वचनयोग और काययोग) का संबंध है।

सबसे खराब लेश्या कृष्णा लेश्या होती है। उससे कम खराब नील लेश्या और उससे कम खराब कापोत लेश्या होती है। तेजो लेश्या अच्छी लेश्या होती है। उससे ज्यादा अच्छी पद्म लेश्या और सबसे ज्यादा अच्छी शुक्ल लेश्या होती है। प्रथम तीन लेश्याओं को अशुभ लेश्या कहा जाता है और शेष तीन को शुभ लेश्याएं कहा जाता है। आदमी को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह शुभ लेश्याओं में रहे और उनमें भी वह शुक्ल लेश्या में रहने का प्रयत्न करे।

आदमी के भीतर विभिन्न भावधाराएं उभरती रहती हैं। शुभभावधारा आती है तो अशुभ भावधारा भी उभर सकती है। अपेक्षा इस बात की है कि व्यक्ति अपनी भावविशुद्धि को परिपुष्ट बनाने का प्रयास करे। प्रेक्षाध्यान का मूल लक्ष्य है चित्त शुद्धि। प्रासंगिक रूप में प्रेक्षाध्यान से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी प्राप्त हो सकता है। जितनी चित्त शुद्धि बढ़ेगी, आदमी उतना ही शांति में रह सकेगा। प्राणी जिस लेश्या में मरता है, उसी लेश्या में आगे उत्पन्न होता है। मृत्यु के समय ही नहीं, अन्य जीवनकाल में भी भावधारा विशुद्ध रहनी चाहिए।

राग-द्वेष कर्म के बीज हैं। इन्हीं के कारण कर्मबंध होता है। लेश्या अशुभ होती है तो प्राणी अधोगति में जाने की स्थिति को प्राप्त हो सकता है और लेश्या शुभ होती है तो आदमी ऊर्ध्वगति में जाने की स्थिति को प्राप्त कर सकता है। आदमी शरीर से क्या करता है, वाणी से क्या बोलता है, उससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है उसकी भावधारा कैसी है? साधु बनने का अर्थ है भावधारा की शुद्धि का मार्ग स्वीकार करना। श्रावक भी उसी का पथिक होता है। आदमी लेश्या शुद्धि, भाव विशुद्धि, परिणाम शुद्धि और कार्य शुद्धि का प्रयास करे, यह काम्य है।’

प्रवास व्यवस्था समिति उपाध्यक्ष श्री इंद्रचंद्र डूंगरवाल, मंत्री श्री माणक डोसी और श्री मानमल मूथा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। बालक प्रत्यूष श्रीश्रीमाल ने गीत का संगान किया। मुनि स्वस्तिककुमारजी की नवीन पुस्तक 'स्वर मंजरी' प्रकाशक जैन विश्व भारती की ओर से पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई।

तमिलनाडु भाजपा नेता व पूर्व राज्यसभा सांसद श्री इला गणेशन ने अपने वक्तव्य में कहा--'मेरा सौभाग्य है कि आज परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का मुझे सुअवसर मिला। केवल दर्शन ही नहीं, उनसे कुछ प्रेरणा प्राप्त करने, उनके प्रवचन सुनने का भी सौभाग्य मुझे मिला है। इसके लिए मैं अपने भगवान के प्रति कृतज्ञता अर्पित करता हूं। बचपन से ही मैं एक स्वयं सेवक हूं। जैन संप्रदाय के बारे में जानता था, लेकिन चेन्नई महानगर में ऐसा भव्य सम्मेलन और ऐसे तपस्वी स्वामीजी पहले कभी नहीं देखे। स्वामीजी! आपका प्रवचन तो जन-जन का कल्याण करने वाला है। मनुष्य का जीवन कैसा होना चाहिए, आपने इसे इतनी सरल और सहज भाषा में बताया कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति को भी समझ आ गया। स्वामीजी! मैं आपके प्रति पुनः कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहना चाहूंगा कि आपने यहां आकर हम सभी तमिलनाडुवासियों के जीवन का कल्याण कर दिया है।'

गुवाहाटी उच्च न्यायालय के अधिवक्ता व भाजपा असम के प्रवक्ता श्री विजन कुमार महाजन ने अपने वक्तव्य में कहा--'संपूर्ण तेरापंथ समाज के लिए आचार्यश्री महाश्रमणजी केवल गुरु ही नहीं हैं, अपितु भगवान भी हैं। मैं असम से हूं। वहां मां कामख्या का शक्तिपीठ है। वह विश्व की अलौकिक शक्ति है। मेरी भगवती मां कामख्या और आचार्यश्री महाश्रमणजी में यह अंतर है कि मेरी मां कामख्या एक देवी हैं और आचार्यश्री महाश्रमणजी जीवन्त भगवान हैं। दूसरा अंतर यह है कि हम मां कामख्या का आशीर्वाद लेने वहां (शक्तिपीठ में) जाते हैं, जबकि आपके और मेरे भगवान आचार्यश्री महाश्रमणजी स्वयं पांव-पांव चलकर सभी भक्तों के बीच आकर हमें आशीर्वाद देते हैं, हम पर कृपा बरसाते हैं। मुझे आचार्यश्री के दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य पहले गुवाहाटी में मिला, फिर कोलकाता में भी यह सुअवसर मिला और आज मैं इसीलिए चेन्नई में आया हूं।

आचार्यश्री दीर्घकाल तक अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश विश्व में फैलाते रहेंगे और हमें आपका आशीर्वाद मिलता रहेगा। मेरी मां कामख्या और हमारे भगवान आचार्यश्री महाश्रमणजी में यह भी अंतर है कि मां के पास रहने के लिए मंदिर है, किन्तु आचार्यश्री का कोई स्थायी निवास नहीं है। मैं मेरी मां कामख्या को धन, दौलत आदि जो भी दक्षिणा देता हूं, वे उसे स्वीकार कर लेती हैं, किन्तु भगवान महाश्रमणजी ऐसी कोई भी दक्षिणा स्वीकार नहीं करते। आचार्यश्री भौतिक वस्तुओं को महत्त्व नहीं देते। मैं हमारे भगवान और गुरु आचार्यश्री महाश्रमणजी को सादर वन्दन करता हूं।'

अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समायोजन

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में प्रेक्षा इंटरनेशनल द्वारा आयोजित अष्टदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आज मंचीय उपक्रम रहा। आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'प्रेक्षाध्यान का अंतर्राष्ट्रीय शिविर लगा हुआ है। प्रेक्षाध्यान जगत में तो यह उपलब्धि है कि इतने विदेशी व्यक्ति प्रेक्षाध्यान से जुड़े हुए हैं। विदेशी हों या देशी, आत्मशुद्धि का कार्य होना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर के शिविरार्थी स्वयं प्रेक्षाध्यान की साधना जारी रखते हुए अपने-अपने स्थानों में प्रेक्षाध्यान के प्रचार का कार्य करते रहें। उनकी आत्मा भावधारा की दृष्टि से उन्नत बनती रहे, मंगलकामना।

कार्यक्रम में रूस से समागत ओल्गा चेरनिकोवा आदि शिविरार्थियों ने प्रेक्षाध्यान गीत का संगान कर नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया। विदेशियों के मुंह से हिन्दी गीत और नमस्कार महामंत्र को सुनकर जनता आश्चर्यचकित थी। स्वीडन से समागत एनिका पाल्मर और रूस से समागत इलिना मांचेकोवा ने अपने शिविरकालीन अनुभवों

को प्रस्तुत करते हुए पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञ भाव अर्पित किए। रूस और उसके पार्श्ववर्ती देशों से समागत शिविरार्थियों ने 'आचार्यश्री महाश्रमणजी-रूस पधारो, रूस पधारो' के उद्घोष के साथ पूज्यप्रवर से रूस पधारने की प्रार्थना की तो उपस्थित जनमेदिनी ने 'ऊँ अर्हम्' की हर्षध्वनि के साथ उनका समर्थन किया।

प्रेक्षा इण्टरनेशनल के द्वारा पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में 99-9८ नवम्बर तक आयोजित अष्टदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में रूस, यूक्रेन, कजाकिस्तान, फ्रांस, स्वीडन, सिंगापुर और लात्विया—इन सात देशों के करीब ७9 व्यक्ति शिविरार्थी के रूप में संभागी बने। संभागियों को आचार्यप्रवर ने प्रेक्षाध्यान की उपसंपदाएं स्वीकार करवाईं। आचार्यप्रवर ने शिविरार्थियों को प्रायः प्रतिदिन प्रशिक्षण प्रदान किया। शिविर के दौरान अनेक बार रूसी शिविरार्थियों ने पूज्यप्रवर से रूस पधारने की प्रार्थना की।

संभागियों को मुनि कुमारश्रमणजी ने प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण दिया। अंग्रेजी भाषा में ध्यान करने वाले कुछ शिविरार्थियों को साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी, साध्वी ऋद्धिप्रभाजी, समणी नियोजिका मल्लिप्रज्ञाजी, समणी अक्षयप्रज्ञाजी, समणी रत्नप्रज्ञाजी, समणी क्षांतिप्रज्ञाजी, समणी विपुलप्रज्ञाजी, समणी संबोधप्रज्ञाजी तथा समणी पुण्यप्रज्ञाजी द्वारा ध्यान का प्रशिक्षण दिया गया। श्री रणजीत दुगड़ तथा श्री माणकचंद रांका भी प्रशिक्षण कार्य में सहयोगी रहे। रूस से समागत मारिया मजूका ने दुभाषिए का दायित्व निभाया, जिससे हिन्दी और अंग्रेजी भाषा से अनजान काफी शिविरार्थी लाभान्वित हो पाए।

पहली बार आने वाले विदेशी पुरुष शिविरार्थियों को नाम प्रदान करने के क्रम में आचार्यप्रवर ने रूस से समागत मत्तै नामक बालक को 'महापुरुष' नाम प्रदान किया। प्रथम बार संभागी बनने वाली विदेशी महिला शिविरार्थियों को साध्वीप्रमुखाजी ने आध्यात्मिक नाम प्रदान किए।

इस शिविर में विभिन्न वर्गों के विदेशियों ने संभागिता प्राप्त की, जैसे-इंजीनियर, सर्जन, उद्योगपति, अध्यापक, बैंकर, मैनेजर, कोस्मो एनर्जिस्ट आदि। यूक्रेन से समागत विकटर नामक एक शिविरार्थी को सुगर की बीमारी के कारण शिविर से पूर्व प्रतिदिन दो इंसुलिन लेने पड़ते थे प्रेक्षाध्यान शिविर के दौरान उसे स्वास्थ्य लाभ हुआ तो वह शिविर के पांचवें दिन से प्रतिदिन एक ही इंसुलिन लेने लगा।

इस शिविर में अनेक व्यक्ति प्रथम बार संभागी बने तो अनेक शिविरार्थी ऐसे भी थे, जिन्होंने सन् २००३ से लेकर अब तक पांच, छह, सात बार अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में संभागिता प्राप्त की। दूसरी, तीसरी बार संभागी बनने वाले शिविरार्थियों की संख्या भी काफी थी। शिविर में कई 'प्रेक्षा ट्रेनर्स' भी संभागी बने।

ज्ञातव्य है कि कई देशों में अनेकानेक विदेशी व्यक्ति 'प्रेक्षा ट्रेनर' के रूप में 'प्रेक्षाध्यान सेंटर्स' का संचालन कर रहे हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के चित्रों में स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि प्रायः प्रत्येक सेंटर में आचार्यश्री महाप्रज्ञ और आचार्यश्री महाश्रमण के चित्र लगे हुए हैं। विदेशी प्रेक्षा प्रशिक्षकों ने बताया कि वे आचार्यप्रवर को वंदन करने और करवाने के उपरान्त प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाते हैं।

उपस्थापना (बड़ी दीक्षा) के अवसर पर नवदीक्षितों को प्राप्त हुआ पावन पाथेय

9८ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा सात दिन पूर्व दीक्षित चारित्रात्माओं की उपस्थापना (बड़ी दीक्षा) का उपक्रम आज के मुख्य कार्यक्रम में रहा। इससे पूर्व नवदीक्षित मुनि अनिकेतकुमारजी, मुनि कौशलकुमारजी, मुनि शुभम्कुमारजी और समणी आदित्यप्रज्ञाजी ने पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञभावों के सुमन अर्पित किए। नवदीक्षित समणियों ने समूह रूप में गीत का संगान कर अपने भावों को प्रस्तुति दी। नवदीक्षित साध्वियों ने परिसंवाद के माध्यम से अपने सप्तदिवसीय अनुभवों को प्रस्तुत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने बड़ी दीक्षा प्रदान करने से पूर्व कहा--'एक सप्ताह पूर्व इन साधु-साध्वियों को सर्व सावध योग का त्याग करवाया गया था अर्थात् सामायिक चारित्र प्रदान किया गया था। आज अष्टम दिवस है। सात दिन पूर्व जो त्याग समुच्चय रूप में किए गए थे, अब अलग-अलग त्याग करवाए जा रहे हैं। इसे आम

भाषा में बड़ी दीक्षा कहा जाता है। महाव्रतों और छोटे व्रत (रात्रि भोजन विरमण) का विस्तारपूर्वक त्याग करवाना उपस्थापना (बड़ी दीक्षा) है। बड़ी दीक्षा भी आगमवाणी से होती है। बड़ी दीक्षा के रूप में छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण करवाया जाता है।'

आचार्यप्रवर ने निर्धारित आर्षवाणी का उच्चारण कर नवदीक्षित साधु-साध्वियों को उपस्थापना (बड़ी दीक्षा) प्रदान की। तत्पश्चात् नवदीक्षित चारित्रात्माओं ने पूज्यप्रवर को सविधि वंदन किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने छह प्रकार की अवग्रहमति बताई है--क्षिप्र को ग्रहण करना, बहुत को ग्रहण करना, बहुविध को ग्रहण करना, ध्रुव को ग्रहण करना, अनिश्चित अर्थात् अनुमान आदि का सहारा लिए बिना ग्रहण करना और असंदिग्ध ग्रहण करना।

आदमी के पास बुद्धि की शक्ति होती है। ऐसा कोई भी प्राणी संसार में नहीं होता, जिसके पास कुछ भी बोध न हो अर्थात् ज्ञानावरणीय कर्म का कुछ क्षयोपशम छोटे से छोटे प्राणी में भी होता है। कुछ भी क्षयोपशम न हो तो वह जीव नहीं होता, वह तो अजीव होता है। क्षयोपशम में तारतम्य होने का कारण व्यक्ति-व्यक्ति के ज्ञान में भी तारतम्य होता है। मनुष्य के पास कुछ विकसित ज्ञान होता है, ऐसा प्रतीत हो रहा है।

जिसके पास बुद्धि होती है, उसके पास बल होता है। बुद्धि एक उपलब्धि होती है। मैं बुद्धि का समर्थक हूँ। उसके विकास को अच्छा मानता हूँ, क्योंकि बौद्धिक व्यक्ति यदि अपनी बुद्धि का अच्छा उपयोग करे तो वह अच्छा कार्य कर सकता है। आदमी को बुद्धि का सदुपयोग करना चाहिए। बुद्धि कुशाग्र होती है तो विद्या का विकास और भी अच्छे रूप में किया जा सकता है।

नवदीक्षित साधु-साध्वियां छेदोपस्थापनीय चारित्र में प्रविष्ट हुए हैं। सात दिनों तक इनमें और हमारे में थोड़ा-सा अंतर था। जैसे--हमारा लाया हुआ भोजन ये कर सकते थे, किन्तु इनका लाया हुआ भोजन हम नहीं कर सकते थे। आज वह भेदरेखा समाप्त हो गई है। मानों अभेद हो गया। अब इनका लाया हुआ आहार हम भी खा सकते हैं। इतने दिन अलगाव था, क्योंकि ये सामायिक चारित्र में थे और हम छेदोपस्थापनीय चारित्र में। आज ये भी हमारे साथ छेदोपस्थापनीय चारित्र में स्थित हो गए हैं। नवदीक्षित साधु-साध्वियों में संयमरत्न की सुरक्षा की दृष्टि से जागरूकता रहनी चाहिए।

नवदीक्षित साधु-साध्वियों में विनय की भावना रहनी चाहिए। बड़ों का विनय करने से आदमी का विकास हो सकता है। अनुशासन का सम्मान रहना चाहिए। गुरु के निर्देश का पालन तो करना ही चाहिए, रत्नाधिकों के कथन का भी यथोचित्य अनुपालन करना चाहिए। बड़ों को वंदन करना चाहिए। पूज्यों, रत्नाधिकों को वंदन करने से निर्जरा के साथ पुण्यबंध भी होता है, किन्तु हमें पुण्य की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए। नवदीक्षित साधु-साध्वियों में आगम ज्ञान का विकास भी होना चाहिए। दसवेंआलियं को यथासंभव कंठस्थ करना चाहिए, रखना चाहिए और उसका समय-समय पर पुनरावर्तन भी करते रहना चाहिए। नवदीक्षित साधु-साध्वियों को तपस्या भी करनी चाहिए। व्यवस्थानुसार एक वर्ष में तीस-बत्तीस उपवास हो जाने चाहिए। उपवास करने की अनुकूलता न हो तो एक उपवास के बदले दो एकासन भी किए जा सकते हैं। हर 'पक्खी' पर एक उपवास, हर चातुर्मासिक पक्खी पर दो उपवास और संवत्सरी पर तीन उपवास की आलोचना दी जाती है। यों कुल मिलाकर तीस और तेरह महीने हों तो बत्तीस उपवास होते हैं, उन्हें वर्ष भर में उतार देने का यथोचित प्रयास होना चाहिए। एकासन भी न हो पाए तो एक उपवास के बदले दो दिन छह विगय वर्जन किया जा सकता है। छह विगय वर्जन भी न हो पाए तो एक उपवास के बदले चार दिन पांच विगयवर्जन भी किया जा सकता है तथा और भी उपाय हो सकते हैं। ये उपवास प्रायश्चित्त के होते हैं।

नवदीक्षित साधु-साध्वियों को अपने आचार के प्रति जागरूक रहना चाहिए। पांच महाव्रत, पांच समितियां, तीन गुप्तियां और रात्रि भोजन विरमण व्रत हमारा आचार है। उसके प्रति सजगता रहनी चाहिए। प्रतिलेखन,

प्रमार्जन, प्रतिक्रमण के प्रति भी जागरूकता रहनी चाहिए। विनय का प्रयोग हो, श्रुत का विकास हो, तपस्या हो और आचार का सम्यक् अनुपालन हो, ये चारों चीजें रहती हैं तो आत्मा निर्मल रह सकती है।'

चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष श्री राजेश कोठारी, मंत्री श्री अशोक बोहरा ने श्रीचरणों में मंगलभाव अर्पित किए। तेरापंथ किशोर मंडल-चेन्नई ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से चेन्नई चतुर्मास की झलकियां प्रस्तुत कीं। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बालिका हिमानी आच्छा, बालक अमित बाफना और बालक ईशान बोहरा ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम के उपरान्त पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में तेरापंथी सभा-चेन्नई द्वारा चंदादेवी डागा प्रेक्षा सेवा संस्कार पुरस्कार उपासक श्री जयंतीलाल सुराणा को प्रदान किया गया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में चेन्नई में मासखमण का कीर्तिमान

चेन्नई में आचार्यप्रवर के सान्निध्य में तीन साधु-साध्वियों सहित ५६ व्यक्तियों ने मासखमण और उससे अधिक दिनों की तपस्या सम्पन्न की। एक व्यक्ति द्वारा दो बार तपस्या करने से संख्या ५७ हो गई। एक चतुर्मास क्षेत्र में इतने मासखमण अथवा उससे अधिक दिनों की तपस्या का होना संभवतः जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में एक कीर्तिमान है। पूज्यप्रवर से मासखमण और उससे अधिक दिनों की तपस्या का प्रत्याख्यान करने वालों के नाम इस प्रकार हैं-

- | | |
|--|--|
| १. साध्वी विशालप्रभाजी (३६ दिन) | २. साध्वी सरलप्रभाजी (३३ दिन) |
| ३. मुनि प्रिंसकुमारजी | ४. श्री चम्पालाल कोटेचा, भुसावल (५१ दिन) |
| ५. श्रीमती नवरतनबाई देरासरिया, बेंगलुरु (५१ दिन) | ६. श्री विनोद छल्लाणी, चेन्नई (३६ दिन) |
| ७. श्री यशवन्त नागसेठिया, चेन्नई (३४ दिन) | ८. श्री कुशलराज नागसेठिया, चेन्नई (३२ दिन) |
| ९. श्री जयचंदलाल पुगलिया, चेन्नई (३२ दिन) | १०. श्रीमती रेखा बम्ब, चेन्नई |
| ११. श्रीमती सुनीता बोरड़, चेन्नई | १२. श्रीमती वंदना भंडारी, चेन्नई |
| १३. श्रीमती रागिनी खटेड़, चेन्नई | १४. श्रीमती लाडबाई मेडतवाल, चेन्नई |
| १५. श्रीमती अनिता आच्छा, चेन्नई | १६. श्रीमती हेमलता डागा, चेन्नई |
| १७. श्री बादल मेहता, चेन्नई | १८. श्री केवलचंद नागसेठिया, चेन्नई |
| १९. श्रीमती भाग्यवती चोपड़ा, चेन्नई | २०. श्री प्रीतेश सिसोदिया, चेन्नई |
| २१. श्रीमती ताराबाई नाहर, चेन्नई | २२. श्रीमती कन्याबाई भंसाली, चेन्नई |
| २३. श्रीमती विमलादेवी माण्डोत, चेन्नई | २४. श्रीमती मधु सेठिया, चेन्नई |
| २५. श्रीमती नीता नागसेठिया, चेन्नई | २६. श्रीमती सज्जनबाई रांका, पुत्तूर |
| २७. श्रीमती कविता लूंकड़, चेन्नई | २८. श्रीमती मीना भंडारी, चेन्नई |
| २९. श्रीमती नीताकुमारी मूथा, चेन्नई | ३०. श्रीमती चन्द्रा मेहता, चेन्नई |
| ३१. श्रीमती रेखा मरलेचा, चेन्नई | ३२. श्रीमती मनोहरदेवी बाफना, बेंगलुरु |
| ३३. श्रीमती सविता पुनमिया, चेन्नई | ३४. श्रीमती किरणदेवी कोठारी, चेन्नई |
| ३५. श्रीमती रीटाकुमारी जैन, चेन्नई | ३६. श्रीमती संतोषदेवी मूथा, चेन्नई |
| ३७. श्रीमती निर्मला छल्लाणी, चेन्नई | ३८. श्री अजय संचेती, चेन्नई |
| ३९. सुश्री कोमल बोहरा, चेन्नई | ४०. श्री राजेशकुमार संचेती, चेन्नई |
| ४१. श्री प्रवीणकुमार सुराणा, चेन्नई | ४२. श्री अभिनव सेठिया, चेन्नई |
| ४३. श्री मनीष डांगरा, चेन्नई | ४४. श्री विनोद पुनमिया, चेन्नई |
| ४५. श्री सुरेशचंद कोठारी, चेन्नई | ४६. श्री मुकेश भटेवरा, चेन्नई |

४७. श्रीमती चंचलादेवी बरड़िया, चेन्नई	४८. श्रीमती रमाबाई बांठिया, चेन्नई
४९. श्रीमती वनिता मरलेचा, चेन्नई	५०. श्रीमती नीतू लूंकड़, चेन्नई
५१. श्रीमती निर्मला बाफना, पालघर	५२. श्री मंगलचंद नागसेठिया, चेन्नई
५३. श्रीमती सुमन चोरड़िया, चेन्नई	५४. श्री श्रेयांस भरसारिया, चेन्नई
५५. श्रीमती मंजूदेवी दुगड़, चेन्नई	५६. श्री बाबूलाल देवता, बालोतरा (६१ दिन और मासखमण)

गुरुकुलवासी चारित्रात्माओं द्वारा एकांतर तप

१. मुनि राजकुमारजी चार माह (वर्षीतप के अंतर्गत)	२. मुनि चैतन्यकुमारजी	चार माह
३. मुनि अमृतकुमारजी चार माह (वर्षीतप के अंतर्गत)	४. मुनि पुनीतकुमारजी चार माह (वर्षीतप के अंतर्गत)	
५. मुनि वर्धमानकुमारजी चार माह (वर्षीतप के अंतर्गत)		
१. साध्वी चित्रलेखाजी एक माह	२. साध्वी प्रमिलाकुमारीजी	एक माह
३. साध्वी चित्रलेखाजी एक माह	४. साध्वी विभाश्रीजी	एक माह
५. साध्वी शारदाश्रीजी एक माह	६. साध्वी प्रज्ञाश्रीजी	एक माह
७. साध्वी शुभ्रयशानी एक माह	८. साध्वी आस्थाश्रीजी	एक माह
९. साध्वी सविताश्रीजी एक माह	१०. साध्वी जयविभाजी	एक माह
११. साध्वी दर्शनविभाजी एक माह	१२. साध्वी सुदर्शनप्रभाजी	दो माह
१३. साध्वी विशालयशानी एक माह	१४. साध्वी परमप्रभाजी	डेढ़ माह
१५. साध्वी ऋद्धिप्रभाजी एक माह		

गुरुकुलवासी चारित्रात्माओं द्वारा तपस्या

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में चेन्नई में तीन चारित्रात्माओं ने मासखमण अथवा उससे अधिक दिनों की तपस्या की। उसके सिवाय आठ से अधिक दिनों की तपस्या करने वाली साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं--

१. साध्वी समताप्रभाजी ग्यारह दिनों की तपस्या
२. साध्वी तन्मयप्रभाजी नौ दिन की तपस्या
३. साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी नौ दिन की तपस्या

साध्वी रायकुमारीजी (जयपुर) का प्रयाण

१८ नवम्बर को जयपुर में साध्वी रायकुमारीजी (जयपुर) का प्रयाण हो गया। उनके विषय में आचार्यप्रवर के उद्गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६ नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- ११०००२ से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला